UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 05 | May 2018

महात्मा गाँधी की बुनियादी-शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्धयन

डॉ. रमेश चन्दर

सहायक प्रोफेसर, संत हरिदास कॉलेज ऑफ़ हायर एजुकेशन नजदीक एयर फ़ोर्स स्टेशन

बैनी कैंप नजफगढ़ नई दिल्ली

शोध-पत्र का सार --- वर्तमान में हम देखते हैं कि **आज** के समय में नवयुवाओं के पास अनेक तरह की डिग्रियाँ हैं , परन्तु रोजगार नहीं है | अत: गांधी जी ने बहुत वर्ष पहले ही इस बेरोजगारी की समस्या की ओर संकेत करके बुनियादी-शिक्षा के अन्तर्गत "उद्योग पर आधारित शिक्षा" पर बल देते हुए कहा था कि - "बालक किसी न किसी हस्त-शिल्प को सीखकर आत्मनिर्भर बन सके तथा बेरोजगारी से मुक्ति पा सके |" अत: गांधी जी की बातों को याद करके वर्तमान में व्यावहारिक-शिक्षा तथा व्यावसायिक-शिक्षा प्राप्ति पर अधिक बल दिया जा रहा है | गांधी जी बालकों में मानवीय गुणों का विकास करने पर बल देते थे | गांधी जी ने करके सीखने की विधि पर अधिक बल देते हुए इसे सीखने की सर्वोत्तम विधि बताया है | उन्होंने सर्वगुण-सम्पन्न एवं दोष-रहित समाज-निर्माण की कल्पना की थी , जो इस शिक्षा के बिना अधूरी है |

मुख्य-शब्द --- बुनियादी-शिक्षा, बेरोजगारी, हस्त-शिल्प, व्यावहारिक-शिक्षा, व्यावसायिक-शिक्षा, आत्मनिर्भर, औपचारिक, अनौपचारिक, निरौपचारिक-शिक्षा |

शिक्षा ---

शिक्षा शब्द संस्कृतभाषा की **"शिक्ष्"** धातु से टाप् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है - "सिखाना और सिखाना ।" मनुष्य एक सामाजिक-प्राणी है । वह समाज में रहकर जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कुछ न कुछ सिखाता और सिखाता रहता है । अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलती रहती है । ***भर्तृहरि ने नीतिशतक में कहा है कि*** --"विधा विहीनः पशु" अर्थात् शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान है । साथ ही मनुष्य अपने आस-पास के वातावरण से भी कुछ न कुछ सीखता और सिखाता रहता है । यदि ध्यान से देखा जाये तो मानव औपचारिक, अनौपचारिक तथा निरौपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त करता है । ***डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है कि*** -- "शिक्षा को सम्पूर्ण बनाने के लिए मानवीय होना चाहिए इसमें न केवल बुद्धि का अनुशासन भी सम्मिलित होना चाहिए ।" ***महात्मा गाँधी ने कहा कि*** -- "शिक्षा से मेरा अभिप्राय है

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 05 | May 2018

बालक और मनुष्य के शरीर, बुद्धि और आत्मा की योग्यताओं का सर्वोतम विकास करना है ।" ***वहीँ रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा कि*** -- "सर्वोतम शिक्षा वह है, जो हमें केवल जानकारी ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन का समस्त सत्ता में समन्वय करती है ।"

अत: शिक्षा की परिभाषा ढूढना अंधकारमय बंद कमरे में किसी अंधे व्यक्ति उस कलि बिल्ली को ढूढने के सामान है, जो वहां पर नहीं है। अतः शिक्षा अब उन शब्दों की श्रेणी में आ चुकी है, जिसको परिभाषा की परिधि में बांधना कठिन है । जिसकी कोई परिभाषा नहीं दी जा सकी जो समय और वातावरण के अनुसार सही हो ।

शिक्षा के प्रति हमारे विचार ---

वास्तविक समस्या यह है कि लोगों को इस बात की जानकारी ही नहीं है कि वास्तविक शिक्षा क्या है ? हम शिक्षा के मूल्यों का इस तरह से मूल्यांकन करते हैं , जिस तरह जमीन या किसी वस्तु का | हम बालकों को इस तरह की शिक्षा दिलाना चाहते हैं , जिससे वह अधिक से अधिक पैसा कमा सकें और अपना भावी-जीवन आनन्दमय तथा सुखपूर्वक व्यतीत कर सकें | जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण चरित्र होता है , परन्तु हम चरित्र सुधार के लिए शिक्षा प्राप्त करने का प्रयास ही नहीं करते | बालिकाओं के बारे में हमारे विचार हैं कि उसको तो कमाने की आवश्कता ही नहीं है | क्योंकि विवाह के पश्चात् तो उसे दूसरे घर जाना है | हम यह नहीं सोचते कि चारित्रि-शिक्षा की उसे बहुत जरूरत है | उसने भी अपने बच्चों सहित सम्पूर्ण दो परिवारों को शिक्षित करना है | कहा भी है कि -यदि एक महिला शिक्षित है तो परा परिवार शिक्षित है | अत: "माता ही पहला गुरु होता है |

भूमिका ---

महात्मा गाँधी का पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी है | इनके पिता का नाम कर्मचन्द गांधी था | इनका जन्म सन् 1869 में पोरबन्दर नामक स्थान पर हुआ | इनका विवाह १३ वर्ष की आयु में सन् १८८९ में कस्तूरबा बाई मानक जी के साथ हुआ , उनकी आयु भी १३वर्ष की थी | गांधी जी ने इस बाल-विवाह का बहुत अधिक विरोध किया | अपनी स्कूली शिक्षा समाप्ति के बाद उनहोंने कानूनज्ञ (वकील) बनने का निश्चय किया | महात्मा गाँधी का मुख्य उद्देश्य स्वदेशी और स्वराज स्थापित करना था |ये दोनों ही शब्द गाँधी जी के सपनों का समाज था | स्वराज का अर्थ है --" स्व-शासन से था" और स्वदेशी अर्थ है – "आत्मनिर्भरता से था |"इसके लिए गांधी जी ने शिक्षा को मुख्य आधार बनाते हुए बुनियादी शिक्षा का ही चुनाव किया |इसको बालक तथा बालिकाओं दोनों के लिए लाभकारी बताया | क्योंकि शिक्षा ही वह प्रथम हथियार है , जो किसी भी देश की उन्नति के लिए आवश्यक है | इसी से बालकों सभ्य तथा संस्कारित किया जाता है |

महात्मा गाँधी आचरण प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत था । संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान समाज-सुधारक तथा राजनितिज्ञ के रूप में स्वीकार करते है । लोगों का मानना था कि व्यक्ति के सर्वागीण विकाश के लिए शिक्षा प्रदान करना एक महत्वपूर्ण योगदान है । गाँधी जी का एक मूल मंत्र था - "शोषण-विहीन समाज की स्थपाना करना " । इसके लिए सभी व्यक्ति शिक्षित हों , जिससे एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सके । इसके लिए उन्होंने शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्यों व सिद्धान्तों का प्रतिपादन करके रटंत विद्या के स्थान पर बुनियादी शिक्षा का ही स्वावलंबी योगदान रहा

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 05 | May 2018

है । उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारतीय बालकों को उस की शिक्षा अर्थात् head, hand, heart की शिक्षा दी जाए , ताकि इस प्रकार की शिक्षा उन्हें स्वावलंबी तथा आत्मनिर्भर बनाकर देश को मजबूत बनाने में योगदान दे सकें ।

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के समय सबसे पहले बुनियादी शिक्षा की कल्पना की थी , आज जिसे विश्वविधालय स्तर पर फाउडेशन कोर्स कहा जाता है ; उसकी पृष्ठभूमि में गाँधी की बुनियादी शिक्षा (बेसिक शिक्षा) ही तो थी । इस शिक्षा के प्रशिक्षण और प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा के दो स्तर है -- स्कूली बच्चे पहली कक्षा से ही चरखे से सूत कातते , फिर रुई से पोनी बनाते थे और सूत की गुड़िया बनाकर या तो कभी भण्डारों को देते थे या बैठने के आसन, रुमाल, चद्दर आदि बनाते थे ।

महात्मा गाँधी का शैक्षिक दृष्टिकोण :--

शिक्षा के बारे में गाँधी जी का दृष्टिकोण वस्तुतः व्यवसायपरक था । उनका मत था कि भारत जैसे गरीब देश में शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने के साथ - साथ कुछ धनोपार्जन भी कर लेना चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें । इसी उद्देश्य को लेकर उन्होंने वध्र शिक्षा के योजना भी बनाई थी, शिक्षा को अधिक लाभदायक एवं अल्पव्ययी की बनाने के दृष्टिकोण से सन १९३६ इसवी में उन्होंने “भारतीय तालीम संघ “ की स्थापना भी की थी । अतः गाँधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है । उनका मूल मंत्र था -“ शोषण-विहीन-समाज की स्थापना करना । अतः इसके लिए आभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है । अतः गाँधी जी ने शिक्षा के उद्देश्यों व सिद्धान्तों की व्यवस्था की है ।

बुनियादी शिक्षा---

अविनाशलिंगम के शब्दों में --- "बुनियादी शिक्षा हमारे राष्ट्रपिता का अन्तिम और महान् उपहार है |" सन् १९३७ में गांधी जी वर्धा में रह रहे अखिल भारतीय राष्ट्र सम्मेलन जिसे , "वर्धा-शिक्षा-सम्मेलन” कहा गया था | उसमें अपनी बेसिक शिक्षा की नई शिक्षा-योजना को प्रस्तुत किया , जो कि दसवीं स्तर तक अंग्रेजी रहित तथा उद्योगों पर आधारित थी | जामिया मिलिया इस्माईल विस्व्विद्याक्ली के तात्कालिक ज्प्राचारी डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में जाकिर हुसैन समिति का १९३८ निर्माण किया |तथा गांधी जी के शिक्षा सम्बन्धी विद्याएँ तथा सम्मेलन द्वारा पारित किये गये प्रस्तावों के आधार पर नई तालीम (बुनियादी शिक्षा) की योजना तैयार की गई | में हरिपुर के अधिवेशन ने इस प्रतिवेदन (रीपोर्ट) को स्वीकृति प्रदान की , जो कि वर्धा-शिक्षा योजना के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बुनियादी शिक्षा का आधार बना |

*बुनियादी **शिक्षा का पाठ्यक्रम** -----*

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 05 | May 2018

पाठ्यक्रम का स्तर वर्तमान मैट्रिक के समकक्ष है । छठवीं एवं सातवीं कक्षाओं में बालिकाएं आधारभूत शिल्प के स्थान पर गृहविज्ञान ले सकती है । पाठ्यक्रम में अंग्रेजी व धर्म-विशेष की शिक्षा के लिए कोई स्थान नहीं है ।

अतः गाँधी जी के अनुसार शिक्षा का अर्थ **है कि**--- "बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में जाये जाने वाले सर्वोतम गुणों का चहुंमुखी विकास करना है ।" अतः बालक के सर्वांगींण **विकास** हेतु उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक गुणों का विकास करना है ।

चूँकि बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, संस्कृति के समीप थी साथ ही सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवसायों से जुड़ी है गाँधी जीने बुनियादी शिक्षा पाठ्यक्रम में आधारभूत शिल्प जैसे कताई-बुनाई, लकड़ी का कार्य, चमड़े का कार्य, मिटटी का कार्य,कृषि कार्य, मछली पालन, फल व् सब्जी की बागवानी, बलिकओं के लिए गृह विज्ञान, इनके अतिरिक्त - गणित, मातृभाषा, सामाजिक-विज्ञान, सामाजिक अध्यन, हिंदी, कला, शारीरिक शिक्षा आदि को स्थान दिया है ।

शिक्षण विधि---

इसके लिए गाँधी जीने करके सीखना , अनुभव द्वारा **सी**खना तथा क्रिया-कलाप के माध्यम से सीखने पर बल दिया है । गाँधी जीने बुनियादी शिक्षा में समवाय पद्धति पर बल दिया है , जिसके अंतर्गत सभी विषयों की शिक्षा, हस्तशिल्प के माध्यम से देने को कहा है ।

बुनियादी शिक्षा की विशेषताएँ ----

- बेसिक शिक्षा के पाठ्यक्रम की अवधि 7 वर्ष है ।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है ।
- हिंदी भाषा अध्ययन बालक तथा बालिकाओं के लिए आवश्यक हो |
- सात से चोदह वर्ष के बालकों व बालिकाओं नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जाए ।
- सम्पूर्ण शिक्षा का सम्बन्ध आधारभूत शिल्प से होता है ।
- चुने हुए शिल्प की शिक्षा देकर अच्छा शिल्पी तथा स्वावलंबी बनाया जाए ।
- शिल्प-शिक्षा इस प्रकार दी जाए कि बालक उसके सामाजिक एवं वैज्ञानिक महत्व को समझ सके |

- शिक्षा बालकों के जीवन, घर, ग्राम तथा ग्रामीण उघोगों, हस्तशिल्पों और व्यवसाय घनिष्ट रूप से सम्बंधित हो ।
- बालकों द्वारा बनाई वस्तुओं को बेचकर विधालयों के ऊपर कुछ व्यय हो सके ।
- बालक तथा बालिकाओं की शिक्षा का पाठ्यक्रम समान हो

UGC Approved Journal
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 05 | May 2018

शारीरिक श्रम को महत्व दिया ताकि सीखे हुए शिल्प के द्वारा जीविकोपार्जन कर सकें ।

गाँधी जी के आधारभूत सिद्धान्त :---

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो । 7 से 14 वर्ष के बालकों की शिक्षा निःशुल्क तथा अनिवार्य हो । साक्षरता को शिक्षा नहीं कहा जा सकता । शिक्षा से बालक के मानवीय गुणों का विकास करना है तथा शिक्षा एसी हो, जिसको बालक के शरीर , हृदय, मन और आत्मा का सामंजस्यपूर्ण विकास हो । सभी विषयों के शिक्षा स्थानीय उधोगों के माध्यम से दी जाए ।

निष्कर्ष :-

अतः निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि गाँधी जी द्वारा दिए गये सांस्कृतिक, नैतिक, आर्थिक व नागरिकता के उद्देश्य के साथ-साथ सर्वोदय समाज की स्थापना की , जिसके अंतर्गत श्रम का महत्त्व होगा धन का नहीं | स्नेह और सहयोग की भावनाएँ होंगी | घृणा एवं पृथकता नहीं होगी | शोषण के स्थान पर परहित की भावना होगी | संचय के स्थान पर त्याग की प्रवृत्ति की भवना होगी | साथ ही गांधी जी ने धर्म-विशेष की शिक्षा का भी बहिष्कार किया |

गाँधी जी द्वारा दिए गए शिक्षा के सिद्धान्त , उद्धेश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधियाँ आज भी बालकों तथा बालिकाओं के लिए , विधालय तथा समाज के लिए उतने ही आवश्यक हैं , जितने महतवपूर्ण उनकी कृति बुनियादी-शिक्षा (बेसिक-शिक्षा) गाँव या नगर के बालकों एवं बालिकाओं की समस्त , सर्वोत्तम एवं स्थाई बातों से संबंध रखती है तथा उन्हें आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी बनाने में मददगार सिद्ध दिखाई देती है । गाँधी जी की शिक्षा मानसिक विकास के अतिरिक्त नैतिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची : --

- पांडेय डाक्टर रामशकल - शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विनोद पुस्तक मंदिर मेरठ |
- लाला रमन बिहारी - शिक्षा के दार्शनिक और समाज समाजशास्त्रीय सिदान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ ।
- पचौरी डाक्टर गिरीश - उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, लायल बुक डिपो, मेरठ ।
- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त - एन.आर. स्वरूप सक्सेना , वितरक - आर.लाल बुक डिपो , मेरठ |
- विभीन्न समाचार-पत्र व पत्रिकाएँ |
- पृष्ठ-जाल |